राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भूमिका :—
‘‘दरभंगा प्रमण्डल के विशेष संदर्भ में’’

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय
कामेश्वर नगर, दरभंगा
के

समाजिक विज्ञान संकाय (इतिहास)
में
पी—एच0 डी0 उपाधि हेतु प्रस्तुत
प्रस्तावित शोध—प्रबन्ध की रूपरेखा
(2021—22)

शोध पर्यवेक्षक

डॉ० दयानन्द मेहता

सहायक प्राध्यापक
इतिहास विभाग
समस्तीपुर कॉलेज, समस्तीपुर।

शोधार्थी

कुमारी शुभांगी
PAT Roll No. -22100176
इतिहास विभाग
ल.ना.मि. विश्वविद्यालय,
कामेश्वरनगर, दरभंगा।

शोध परियोजना का नाम :—

''राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भूमिकाः— दरभंगा प्रमण्डल के विशेष संदर्भ में''

प्रस्तावना :

राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। उनकी भूमिका को स्पष्ट करना इतना आसान नहीं है। महिलाओं द्वारा लिखी गई आत्मकथा व्यक्तिगत डायरियाँ और विभिन्न पत्र—पत्रिकाओं में लिखे गए लेखों में राष्ट्रीय आन्दोलनों में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका थी।

महिलाओं की दुनिया घर की चारदीवारी के भीतर तक ही सीमित थी। उसे पुरूष की आज्ञाकारिणी माना जाता था। बहुत—सी महिलाओं ने अपने साहस, त्याग और बलिदान राष्ट्रीय आंदोलनों के लिए समर्पित कर दिया और पारिवारिक भूमिका के साथ—साथ राष्ट्रवादी गतिविधियों में अपनी हिस्सेदारी का परिचय दिया। पुरूषों के साथ कंधे से कंधे मिलाकर संघर्ष किया। गाँधीजी ने स्वीकार किया कि यह स्वतंत्रता हमारी माँ और बहनों के योगदान के बिना संभव नहीं है।

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में बहुत सी महिलाओं ने भाग लिया था। राष्ट्रीय स्तर पर सरोजिनी नायडू, विजयलक्ष्मी पंडित, कमलादेवी चट्टोपाध्याय और मृदुला साराभाई से शुरूआत हुई। प्रांतीय स्तर पर केरल में ऐनी मैसकरीन और ए०वी० कुट्टी मलुअम्मा, मद्रास में दुर्गाबाई देखमुखी, यू०पी० में रामेश्वरी नेहरू, बी अम्मन, दिल्ली में सत्यवती देवी और सभद्रा जोशी, मुबंई में हंशा मेहता और उषा मेहता और भी बहुत सी महिलाओं ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया।

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में भारतीयों के साथ–साथ विदेशी महिलाओं एनीबेसेन्ट, मारग्रेट नोबुल, मैडम भीकाजी कामा, मैडलिन स्लेड, म्यूरिल लिस्टर ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में अपनी अहम भूमिका निभाई।

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की जब हम बात करते हैं तो वह हमारा कोई भी आंदोलन हो चंपारण सत्याग्रह, असहयोग आंदोलन, खिलाफत आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन या भारत छोड़ो आंदोलन हो। इसमें हमारे बिहार की महिलाओं का अहम योगदान रहा है। सन् 1917 में बिहार में महात्मा गाँधी के पर्दापण के साथ ही आंदोलन में महिलाअें का योगदान बढ़ गया, सन् 1919 तक कस्तूरबा गाँधी, श्रीमती सरला देवी, प्रभावती जी, राजवंशी देवी, सुनीता देवी, राधिका देवी जैसी विरांगणा महिला की प्रेरणा से संपूर्ण बिहार की महिलाओं में आजादी के प्रति रूझान बढ़ गया। इसी प्रकार सावित्री देवी श्रीमती शैलबाला राय हजारीबाग से सरस्वती देवी, साधना देवी, गिरिडीह से मीरा देवी, पटना में श्रीमती हसन हमाम तथा विंद्यावासिनी देवी, संथाल परगना से साधना देवी, वैशाली से बिंदा देवी ने अपनी अहम भूमिका निभाई। इस राष्ट्रीय आंदोलन में बिहार से बहुत सी महिलाएं जेल भी गई, जिनमें पटना से विद्यावति देवी, गया से जानकी देवी, सरस्वती देवी, सुरजया देवी, तेतरी देवी, राधाकुशन, शांति देवी, दुर्गा देवी, सारण से शारदा देवी, सरस्वती देवी, रामस्वरूप देवी, शांति देवी, छपरा से जनकदुलारी देवी, शाहबाद से सावित्रि देवी, नवादा से नारायणी देवी इस प्रकार इन सभी महिलाओं के योगदान से स्वतंत्रता संभव हो पाया।

इस प्रकार राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं के अहम योगदान से दरभंगा प्रमण्डल भी अछुता ना रहा। दरभंगा प्रमण्डल की महिलाओं ने भी अहम भूमिका निभाई जिसमें सर्वप्रथम नाम दरभंगा जिला के बाबूपुर गाँव की कृष्णा देवी का नाम

आता है। कृष्णा देवी ने 1942 ईसवीं के अगस्त क्रांति में भाग लेकर सम्पूर्ण भारत को यह एहसास दिला दिया कि महिलाएँ, पुरूषों से पीछे नहीं है। दरभंगा के हायाघाट प्रखण्ड में मझौलिया स्थित मगन आश्रम की स्थापना की गई। जहाँ से मिथिला में स्वतंत्रता आंदोलन की नींव पड़ी। इसकी स्थापना पंडित रामनन्दन मिश्र एवं उसकी पत्नी राजकिशोरी देवी ने की। इसी के साथ मझौलिया निवासी जगदीश चौधरी एवं उनकी पत्नी कमला देवी, नारायण चौधरी एवं उनकी पत्नी जगदम्बा देवी, नीरस चौधरी एवं उनकी पत्नी सावित्री देवी का भी अहम योगदान रहा।

सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान दरभंगा में महिलाओं ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया। इस आंदोलन के दौरान 74 आंदोलनकारियों को गिरफ्तार किया गया जिनमें 14 महिलाएं थी। इसके अतिरिक्त भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान समस्तीपुर जिला की अनेक महिलाएँ आंदोलन के दौरान वीरगति को प्राप्त हुई जिसमें कल्याणपुर के शिवगोपाल दुसाध की पत्नी अकली देवी तथा रोसड़ा के भुट्टोगोप की पुत्री कुमारी धतुरी तथा पत्नी सोमरिया देवी तथा गोविंदपुर के नरसिंह गोप की पत्नी जिरियावती, आदि महिलाओं का नाम प्रमुख रूप से आता है।

इन विवरणों से पता चलता है कि सामाजिक एवं शैक्षिणिक दृष्टि से पिछड़ा होने के बावजूद महिलओं में स्वतंत्रता आंदोलन के प्रति जबरदस्त जागरूकता थी। इसके अतिरिक्त ना जाने कितनी ऐसी स्वतंत्रा सेनानी महिलाएँ हैं जिसका योगदान सराहनीय है। परंतु उनका विवरण अपर्याप्त है। वह इतिहास के पन्नों में गुमनाम दफन है।

मेरा शोध पत्र खास तौर पर वैसी महिलाओं के लिए एक विनम्र श्रद्धांजलि है।

पूर्व अध्ययन की समीक्षाः—

1. स्त्री संघर्ष का इतिहास :— (राधा कुमार)

   यह पुस्तक स्त्रियों के इतिहास की पहली बेहतरीन पुस्तक है। इसमें 19वीं से 20वीं शताब्दी के आखिर तक का इतिहास शामिल है। यह पुस्तक स्त्री के संघर्ष को समर्पित है। इसमें महिलाओं के अधिकार को लेकर किए गए आंदोलन शामिल है।

2. Women in Indian National Congress (1921-31) (Rajan Mohan)

   यह पुस्तक भी पारंपरिक इतिहास लेखन की शैली में ही लिखा गया है। इसमें राष्ट्रीय आंदोलन की प्रगति का वर्णन है। बंग—बंग एवं स्वदेशी आंदोलन, असहयोग आंदोलन में महिलाओं की भूमिका के साथ में महिलाओं के छोटे—छोटे कार्यों की अहमियत दी गई है। इसका एक अध्याय में महिला को 'अबला' नहीं 'सबला' के रूप में व्यक्त किया गया है।

3. Women in Modern India (Geraldine Forbex)

   इस पुस्तक में राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं के सहयोग को दिखाया गया है इसमें कई नई महिलाओं के नाम मिलते है जिनके योगदान महत्वपूर्ण है।

4. स्त्री दर्पण (रामेश्वरीनेहरू, 1909)

   स्त्री दर्पण आजादी के लड़ाई में स्त्रियों के संघर्ष को उकेड़ने वाली पहली महत्वपूर्ण पत्रिका थी। इसमें राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं के योगदान का वर्णन है।

5. भारतीय महिला आंदोलन कल आज और कल (दीप्ती प्रिया महरोत्रा)

इस पुस्तक में महिला आंदोलन की संक्षिप्त रूप रेखा प्रस्तुत की गई है। महिला आंदोलन का इतिहास इसकी सोच, इसके पात्र, मुद्दो और तरीकों के बारे में ठोस जानकारियाँ देना और विश्लेषणात्मक समीक्षा करना है।

अध्ययन का उद्देश्य, महत्व एवं प्रासंगिकताः—

बेशक राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान महिला शिक्षा, महिला संगठनों के गठन और भारतीय राजनीति में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी ने महिलाओं के जीवन को पुरी तरह बदल दिया। अब आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ चली।

भारत की स्वाधीनता के लिए जो भी आंदोलन हुए उनमें महिलाओं ने खुल कर भाग लिया एवं अपना सबकुछ राष्ट्र को समर्पित कर दिया। असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन एवं भारत छोड़ो में तो महिलाओं का पूरा हुजूम ही दिखता है। जिसका अनेक पुस्तकों में वर्णन मिलता है। लेकिन कालान्तर में किस तरह महिलाओं की महत्ता कम हो गयी पता ही नही चलता। कैसे भारतीय इतिहास में महिलाएं गायब हुई और कैसे उनको राजनीतिक परिवेश से दूर कर दिया गया इसका कोई विवरण नहीं है। भारत छोड़ो आंदोलन में भारी संख्या में महिलाएं दिखी थी उसे पहचानने की जरूरत है। पुरूष प्रतिभागियों/प्रतिनिधियों की तरह महिला प्रतिभागियों को खोजने की आवश्यकता है। यह शोध निश्चित रूप से इतिहास लेखन के कार्य में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा जो कि भविष्य में आंदोलन या राजनीतिक क्षेत्र में या सामाजिक क्षेत्र में महिलाओं के लिए प्रेरणा स्त्रोत बन सकता है।

ज्ञान के क्षेत्र में योगदानः–

वर्त्तमान शोध का उद्देश्य ''राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भूमिका दरभंगा प्रमण्डल के विशेष संदर्भ में है'' जिसके निम्नलिखित मुख्य उद्देश्य शामिल किए गए है :–

1. राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास में जगह पा सकने वाली अधिक से अधिक गुमनाम महिलाओं को एतिहासिक पहचान दिलाना।
2. राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं के योगदान को सामने लाकर आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक पटल पर महिलाओं के लिए प्रेरणा श्रोत खोजना।
3. राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भूमिका को सामने लाकर महिला सशक्तिकरण में योगदान देना।
4. परंपरागत इतिहास लेखन के विद्याओं से अलग नारीवादी दृष्टिकोण एवं अंतर अनुशासनिक अध्ययन पद्धति को अपनाते हुए छुपे तथ्यों को सामने लाना।

अध्ययन क्षेत्रः–

राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भूमिका या बिहार के संदर्भ में तो अनेक कार्यों हुए है परंतु महिलाओं के योगदान को लेकर दरभंगा प्रमण्डल के विशेष संदर्भ में अभी तक कोई भी शोध कार्य नहीं हुआ है। अतएव यह विषय शोध के लिए अत्यंत आवश्यक है।

अध्ययन पद्धतिः–

प्रस्तावित शोध प्रबंध प्रमुखतः ऐतिहासिक स्त्रोतों पर आधारित होगा इसमें विश्लेषणात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया जाएगा। भविष्य में आवश्यकता अनुसार अन्य प्रविधियों का भी प्रयोग किया जाएगा।

स्त्रोत सामग्री की उपलब्धताः—

प्रस्तावित शोध कार्यों के मूल स्त्रोत निम्नलिखित ग्रंथों/दस्तावेजों उस काल की लिखी पुस्तकें पत्र—पत्रिकाओं आदि का अध्ययन किया जाएगा।

द्वितीय स्त्रोत में विषय से संबंधित पुस्तकें व लेखों का अध्ययन म्यूजियम और लाइब्रेरी तथा राष्ट्रीय अभिलेखागारों का उपयोग किया जाएगा।

(क). केन्द्रीय पुस्तकालय दरभंगा।

(ख). केन्द्रीय पुस्तकालय कलकत्ता।

(ग). केन्द्रीय पुस्तकालय समस्तीपुर कॉलेज, समस्तीपुर।

(घ). सिन्हा पुस्ताकलय पटना।

(ड़) खुदाबख्श पुस्तकालय, पटना।

उपकल्पनाः—

अनुसंधान के क्रम में समस्या के कथन के तुरंत पश्चात् एक उपयुक्त उपकल्पना की रचना की आवश्यकता होती है। उपकल्पना के अभाव में वैज्ञानिक अध्ययन प्रायः संभव नहीं है। इसका कारण है कि समस्या का स्वरूप अधिकतर विषम विस्तृत तथा मिश्रित रहता है। जिसमें अध्ययन का स्वरूप स्पष्ट सूक्ष्म तथा गहन हो जाता है। इस प्रकार अनुसंधान में उपकल्पना की रचना अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। (1) राष्ट्रीय आंदोलन की सफलता में दरभंगा प्रमण्डल में महिला स्वतंत्रता सेनानियों की नेतृत्व और भागीदारी के स्तर पर महत्वपूर्ण भूमिका थी। (2) राष्ट्रीय आंदोलन के क्षेत्रीय विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि मिथिला के क्षेत्र

में महिलाओं के द्वारा स्वतंत्रता के लिए संघर्ष के साथ–साथ समाज सुधार के लिए भी आंदोलन किया गया।

कार्य योजनाः–

प्रस्तावित शोध प्रबंध के निम्नलिखित छः अध्याय होंगें।

प्रथम अध्याय : राष्ट्रीय आंदोलन और महिलाएं एक परिचय।

द्वितीय अध्याय :राष्ट्रीय आंदोलन में बिहार की महिलाओं की भूमिका।

तृतीय अध्याय : राष्ट्रीय आंदोलन में महिलओं का योगदान दरभंगा के संदर्भ में।

चतुर्थ अध्याय : राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी समस्तीपुर के संदर्भ में।

पंचम अध्याय : राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की सहभागिता मधुबनी के संदर्भ में।

षष्ट अध्याय : उपसंहार

संदर्भ ग्रथ सूचीः–

1. झा डॉ० शंकर : ''ए हिस्ट्री ऑफ दरभंगा राज, पटना, 1962।
2. बाला उषा : ''भारत की विरंगणा'' प्रविसूत्रम, भारत सरकार, 2006।
3. राठोर डॉ० मधो : ''पंचायती राज और महिला विकास'', पांइटर पब्लिशर्स, जयपुर।
4. कुमार डॉ अवनीश : ''स्टडीज ऑफ द हिस्ट्री ऑफ मॉर्डन बिहार'', पटना, 2008।

5. सिंह रत्नेश प्रसाद : ‘‘बलीपंथी जिला स्वतंत्रता सेनानी संघ‘‘, समस्तीपुर, 1946।
6. फोबोस जेराल्डीन : ‘‘वीमेन इन मॉर्डन इंडिया‘‘, नई दिल्ली, 2019।
7. अली अरूणा आसफ : ‘‘द रिसर्जेन्स ऑफ इंडियन वीमेन‘‘ नई दिल्ली, 1991।
8. चंद्र बिपिन : ‘‘इंडियाज स्ट्रगल फॉर इंडिपेन्डेन्स‘‘, नई दिल्ली, 1989।
9. अग्रवाल डॉ० गिरीराज शरण निख्तर खानकाही : ‘‘नाटी आज और कल हिन्दी साहित्य निकेतन‘‘, विजनौर।
10. चंद्र बिपिन : ‘‘आधुनिक भारत का इतिहास‘‘ नई दिल्ली, 2019।
11. कौर मनमोहन : ‘‘रोल ऑफ इंडियन वीमेन इन फिरिडम मुवमेंट‘‘ दिल्ली, 1968।
12. सरकार सुमित : ‘‘मॉर्डन इंडिया‘‘, मद्रास, 1983।
13. मेनन विशालाक्षी : ‘‘इंडियन वीमेन एण्ड नेशनलीज्म‘‘ नई दिल्ली, 2003।
14. कुमार रविन्द्र : ‘‘द मेकिंग ऑफ ए नेशन‘‘ दिल्ली, 1989।
15. मजुमदार वीना लीला कस्तुरी : ‘‘वीमेन एण्ड इंडियन नेशनलिज्म‘‘ नई दिल्ली, 1994।
16. मिनो गेल : ‘‘द खिलाफत मुवमेंट‘‘, दिल्ली, 1982।
17. संगारी कुमकुम सुरेश वैद : ‘‘रिकास्टिंग वीमेन‘‘, नई दिल्ली, 1986।
18. अलोसियम जी० : ‘‘नेशनलिज्म विदआउट ए नेशन इन इंडिया‘‘ दिल्ली, 2009।
19. कुमार अमरेन्द्र : ‘‘स्वाधीनता संग्राम में बिहार की महिलाएं‘‘, 1997।
20. वर्णवाला महेश कुमार भारती डॉक्टर श्याम मूर्ति : ‘‘बिहार एक समग्र अध्ययन कॉसमॉस पब्लिकेशन‘‘, दिल्ली, 2019।

शोध पर्यवेक्षक

डॉ० दयानन्द मेहता
सहायक प्राध्यापक

विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग

समस्तीपुर कॉलेज, समस्तीपुर।

शोधार्थी

कुमारी शुभांगी
PAT Roll No.-22100176

इतिहास विभाग

ल.ना.मि. विश्वविद्यालय,

कामेश्वरनगर, दरभंगा।